Sign in to edit and save changes to this file.

उद्यानिकी फसलों एवं जलवायु परिवर्तन की राष्ट्रीय संगोष्ठी में कृषि वैज्ञानिकों ने प्रस्तुत किये शोध हुआ मंथन

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर में चल रही चार दिवसीय उद्यानिकी फसलों एवं जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन तकनीकी सत्र तीन कक्षओ में सुचारू रूप से चलाया गया। और वैज्ञानिकों ने अपने शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया तथा उस पर गहनता से मंथन हुए. केंद्रीय उपोष्ण संस्थान संस्थान रहमान खेड़ा लखनऊ के प्रधान वैज्ञानिक डॉक्टर आर ए राम ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को जैविक खेती विधि अपनाकर कम किया जा सकता है।उन्होंने अपने शोध में बताया कि यदि मृदा उपजाऊ होती है तो वर्षा जल संचयन अधिक होता है और इस विधि द्वारा एक ही खेत में तीन से चार फसलें 1 वर्ष में ले सकते हैं।उन्होंने बताया कि रासायनिक उर्वरकों के पोषक तत्वों का 25ब्न हिस्सा ही पौधे ले पाते हैं बाकी की हानि होती है। जलवायु परिवर्तन के लिए कार्बन डाई ऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड एवं मिथेन गैस जिम्मेदार हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में केवल 5 से 6प्रतिशत ही जंगल हैं यदि 25 प्रतिशत जंगल कुल भाग में हों तो पर्यावरण संतुलित रहेगा। इसके लिए उन्होंने सलाह दी है कि खेतों की मेड़ों पर नीम एवं फलदार पौधों का वृक्षारोपण किया जाए। जिससे ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी आएगी और जैव विविधता बढ़ेगी साथ ही गुणवत्ता युक्त उत्पाद प्राप्त होगा। प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय पुणे के निदेशक डॉक्टर मेजर सिंह ने बताया कि प्याज की खपत पूरे वर्ष होती है। उन्होंने कहा कि 20ब्न ब्याज खरीफ में 20ब्न देर खरीफ में एवं 60प्रतिशत रबी में उत्पादन होता है।उन्होंने बताया कि प्याज भंडारण के लिए 27 डिग्री सेल्सियस तापमान के साथ ही भंडार गृह हवादार होना आवश्यक है।डॉ सिंह ने बताया कि देश में 260 मिलियन टन प्याज का उत्पादन होता है। यदि इसकी हानियों को रोक लिया जाए तो 10 हजार करोड रुपए बचत होगी। संगोष्ठी में लीड, मौखिक एवं पोस्टर इत्यादि विधि द्वारा वैज्ञानिकों ने अपने शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह एवं पूर्व महानिदेशक उद्यान आईसीएआर डॉक्टर एच पी सिंह द्वारा सभी शोधों के प्रस्तुतीकरण का अवलोकन भी किया गया। संगोष्ठी सचिव डॉ करम हुसैन ने बताया कि देश के कई राज्यों से आए वैज्ञानिकों ने आज 60 से अधिक शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया।

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com
30/05/2022

सीएसए में जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का दूसरा दिन

जैविक खेती करें तो नुकसान से रहेंगे दूर

मंथन

कानपुर, वरिष्ठ संवाददाता। जलवायु परिवर्तन से किसानों को काफी नुकसान हो रहा है। अगर वे जैविक खेती करें तो इस नुकसान को कम कर सकते हैं। केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आरए रहमान ने बताया कि इस बात की शोध में पुष्टि हो चुकी है। शोध में पता चला कि जैविक खेती से मिट्टी उपजाऊ होती है, जिससे वर्षा जल संचयन अधिक होता है। इससे एक खेत में तीन से चार फसलें एक वर्ष में ली जा सकती हैं। वह चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में उद्यानिकी फसलों एवं जलवायु परिवर्तन विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोल रहे थे। इसमें देशभर के करीब 400 वैज्ञानिक हिस्सा ले रहे हैं।

संगोष्ठी के दूसरे दिन रविवार को जलवायु परिवर्तन से होने वाले नुकसान पर मंथन हुआ। तकनीक सत्र तीन अलग-अलग कक्षों में चला। डॉ. आरए रहमान ने बताया कि रसायनिक खादों के पोषक तत्वों का 25 फीसदी हिस्सा ही पौधे ले पाते हैं। जलवायु परिवर्तन के लिए कार्बन डाईऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड व मिथेन गैस जिम्मेदार हैं। पर्यावरण को संतुलित करने के लिए 25 फीसदी जंगल होना जरूरी है, जबकि वर्तमान में पांच से छह फीसदी जंगल ही प्रदेश में बचे हैं। संगोष्ठी में मौखिक व पोस्टर के माध्यम से करीब 60 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। विवि के कुलपति डॉ. डीआर सिंह व पूर्व महानिदेशक उद्यान-आईसीएआर डॉ. एचपी सिंह ने सभी शोध के प्रस्तुतीकरण का अवलोकन किया। संगोष्ठी के सचिव डॉ. करम हुसैन ने बताया कि देशभर से विशेषज्ञ अपने शोध के माध्यम से नुकसान को कम करने पर जानकारी दे रहे हैं।

सीएसए में जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन विशेषज्ञों ने मंथन किया।

मेड़ पर लगाएं पौधे

वैज्ञानिकों ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए खेतों की मेड़ों पर नीम व फलदार पौधे लगाए जाने चाहिए। इससे ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी आएगी और जैव विविधता बढ़ेगी। साथ ही पर्यावरण में सुधार होगा और गुणवत्ता युक्त उत्पाद मिलेगा।

10 हजार करोड़ की बचत

प्याज एवं लहुसन अनुसंधान निदेशालय पुणे के निदेशक डॉ. मेजर सिंह ने बताया कि पूरे साल प्याज की खपत है। प्याज का 20 फीसदी उत्पादन खरीफ में, 20 फीसदी देर खरीफ में और 60 फीसदी रबी की फसल में होता है। नुकसान को रोक लिया जाए तो करीब 10 हजार करोड़ रुपये की बचत संभव है।

जैविक खेती अपनायें, कम होंगे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

एक ही खेत में तीन-चार फसलें एक वर्ष में ले सकते हैं किसान

चर्चा में भाग लेते वैज्ञानिक।

उद्यानिकी फसलों एवं जलवायु परिवर्तन पर कृषि वैज्ञानिकों ने प्रस्तुत किये ६० शोधपत्र, चर्चा की

कानपुर 29 मई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय परिसर में चल रही चार दिवसीय उद्यानिकी फसलों एवं जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन तकनीकी सत्र में वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिकों ने अपने शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया और गहन स्तर पर चर्चा की। केंद्रीय उपोष्ण संस्थान संस्थान रहमान खेड़ा लखनऊ के प्रधान वैज्ञानिक डॉ आर ए राम ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को जैविक खेती विधि अपनाकर कम किया जा सकता है।उन्होंने अपने शोध में बताया कि यदि मृदा उपजाऊ होती है तो वर्षा जल संचयन अधिक होता है और इस विधि द्वारा एक ही खेत में तीन से चार फसलें 1 वर्ष में ले सकते हैं।उन्होंने बताया कि रासायनिक उर्वरकों के पोषक तत्वों का 25 प्रतिशत हिस्सा ही पौधे ले पाते हैं बाकी की हानि होती है। जलवायु परिवर्तन के लिए कार्बन डाई ऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड एवं मिथेन गैस जिम्मेदार हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में केवल 5 से 6 प्रतिशत ही जंगल हैं यदि 25 प्रतिशत जंगल कुल भाग में हों तो पर्यावरण संतुलित रहेगा। इसके लिए उन्होंने सलाह दी है कि खेतों की मेड़ों पर नीम एवं फलदार पौधों का वृक्षारोपण किया जाए। जिससे ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी आएगी और जैव विविधता बढ़ेगी साथ ही गुणवत्ता युक्त उत्पाद प्राप्त होगा। प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय पुणे के निदेशक डॉ मेजर सिंह ने बताया कि प्याज की खपत पूरे वर्ष होती है। उन्होंने कहा कि 20 प्रतिशत ब्याज खरीफ में 20 प्रतिशत देर खरीफ में एवं 60 प्रतिशत रबी में उत्पादन होता है।उन्होंने बताया कि प्याज भंडारण के लिए 27 डिग्री सेल्सियस तापमान के साथ ही भंडार गृह हवादार होना आवश्यक है।डॉ सिंह ने बताया कि देश में 260 मिलियन टन प्याज का उत्पादन होता है। यदि इसकी हानियों को रोक लिया जाए तो 10 हजार करोड रुपए बचत होगी। संगोष्ठी में लीड, मौखिक एवं पोस्टर इत्यादि विधि द्वारा वैज्ञानिकों ने अपने शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया। सीएसए के कुलपति डॉ डीआर सिंह एवं पूर्व महानिदेशक उद्यान आईसीएआर डा. एच. पी. सिंह द्वारा सभी शोधों के प्रस्तुतीकरण का अवलोकन भी किया गया। आयोजक सचिव डॉ करम हुसैन ने बताया कि देश के कई राज्यों से आए वैज्ञानिकों ने आज 60 से अधिक शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया ।

लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद व हल्द्वानी से प्रकाशित

अमृत विचार

एक सम्पूर्ण अखबार

वर्ष 32, अंक 136, पृष्ठ 16, मूल्य : 4 रुपये

लखनऊ*, सोमवार, 30 मई 2022

www.amritvichar.com

मूड में नहीं जेलेंस्की...16

मनीषा ने दो स्वर्ण व भगत ने

राष्ट्रीय सेमिनार | विशेषज्ञों ने जताई चिंता, जैविक खेती से जलवायु परिवर्तन पर रोक लगाने का फार्मूला बताया

अब खास नहीं रहा आम, उर्वरकों ने बिगाड़ा स्वाद

शशांक शेखर भारद्वाज, कानपुर

'इंसान के हाथों की बनाई नहीं खाते। हम आम के मौसम में मिठाई नहीं खाते।' जब यह शेर लिखा गया होगा तो वाकई आम को इसकी मिठास की वजह से फलों का राजा कहा जाता था, लेकिन रासायनिक उर्वरकों और दवाओं की वजह से इसका स्वाद बिगड़ता जा रहा है। इसकी मिठास धीरे-धीरे खटास की ओर बढ़ रही है। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में चल रही उद्यानिकी फसलों एवं जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन रविवार को कृषि वैज्ञानिकों ने इस समस्या पर

चिंता जताई। उसकी वजह से भविष्य में न सिर्फ आम, बल्कि अन्य फलों की पैदावार कम हो सकती है। मित्र कीटों की संख्या कम हो रही है, जबकि शत्रु कीटों का हमला कुछ बढ़ गया है।

लखनऊ रहमान खेड़ा स्थित केंद्रीय उपोष्ण संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आरए राम ने बताया कि रासायनिक उर्वरकों की वजह से आम की मिठास और रस कम हो रहा है। इस वर्ष मलिहाबाद आम की फसल 25 फीसद कम हो सकती। फल बेधक कीट का हमला हुआ है। मित्र कीट कम होने लगे हैं। डॉ. राम के मुताबिक देश में 25 फीसदी जंगल होना आवश्यक है, जो कि वर्तमान में पांच से छह प्रतिशत है। जंगल होने से पेड़ कार्बन डाई ऑक्साइड सोखते हैं, समय से बरसात होती है, जल स्तर ऊपर होता है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को जैविक खेती विधि से कम किया जा सकता है।

पुणे स्थित प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. मेजर सिंह ने बताया कि देश में 260 मिलियन टन प्याज का उत्पादन होता है।

हर वर्ष 40 से 45 फीसद प्याज प्रबंधन के अभाव में सड़ जाती है। इसकी कीमत करीब 10 हजार करोड़ रुपये है। उनके संस्थान ने ओनियन कोल्ड स्टोरेज बनाया है। इसमें तापमान 27 और आर्द्रता 60 डिग्री सेल्सियस से कम रहती है। स्टोरेज में हवा के संचार की व्यवस्था की गई है। सेमिनार में कृषि वैज्ञानिकों ने अपने शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया। सीएसए के कुलपति डॉ. डीआर सिंह, पूर्व महानिदेशक उद्यान आईसीएआर डॉ. एचपी सिंह, डॉ. एसएन सुनील पांडेय, डॉ. खलील खान आदि मौजूद रहे।

> रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल से आम की मिठास और रस कम हो रहा है। इस वर्ष मलिहाबाद आम की फसल 25 फीसद कम हो सकती। फल बेधक कीट का हमला हुआ है। मित्र कीट कम होने लगे हैं। देश में 25 फीसदी जंगल होना आवश्यक है, जो वर्तमान में पांच से छह प्रतिशत है। - डॉ. आरए राम, प्रधान वैज्ञानिक, केंद्रीय उपोष्ण संस्थान

दैनिक जागरण 30/05/2022

फलों के राजा को लगी जलवायु परिवर्तन की नजर

जासं, कानपुर : देश-दुनिया में अपने स्वाद के लिए विख्यात मलिहाबादी आम को जलवायु परिवर्तन की नजर लगने से पैदावार में कमी आ सकती है। चंद्रशेखर कृषि एवं प्रौद्योगिकी (सीएसए) विश्वविद्यालय में एएसएम फाउंडेशन की ओर से 'जलवायु परिवर्तन एवं उद्यान फसलों का विकास' पर आयोजित चार दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के दूसरे दिन रविवार को लखनऊ के रहमानखेड़ा स्थित केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान के प्रधान विज्ञानी डा. आरए राम ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस वर्ष जलवायु परिवर्तन की वजह से मलिहाबाद में आम की पैदावार में करीब 25 प्रतिशत तक कमी आ सकती है। तैयार हो रही फसल के स्वाद, फलों के आकार, गूदे व रंग आदि में अंतर है।

उन्होंने बताया, रासायनिक कीटनाशकों के ज्यादा प्रयोग से नए रोग व दो वर्ष से फल भेदी कीट ज्यादा आ रहे हैं। वर्तमान में आम की 1100 प्रजातियां हैं, जिसमें

डा. मेजर सिंह ● जागरण

डा. आरए राम ● जागरण

राष्ट्रीय कार्यशाला

अरुणिमा और अंबिका तीन वर्ष पूर्व विकसित हुई थीं। इसके आम बैंगनी और लाल रंग के होते हैं। विदेश में काफी मांग है। उन्होंने फसलों को जलवायु परिवर्तन से बचाने के लिए जैविक और प्राकृतिक खेती पर जोर दिया, जिससे मिट्टी में पोषक तत्वों जिंक, कापर, बोरान, आयरन, मोलिबेडनम, मृदा कार्बन आदि की मात्रा संतुलित रहती है। बरसात का पानी भी फसलों की जड़ों के माध्यम से संरक्षित होता है। रसायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल से मिट्टी वर्षा जल को नहीं सोख पाती है।

फल-सब्जियों को संरक्षित रखने के लिए विशेष कोल्ड स्टोरेज

महाराष्ट्र के पुणे स्थित प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय के विज्ञानियों ने ऐसा कोल्ड स्टोरेज विकसित किया है, जो फल व सब्जियों के मुताबिक तापमान, आर्द्रता व हवा को नियंत्रित कर उन्हें संरक्षित रखेगा। निदेशालय के निदेशक डा. मेजर सिंह ने बताया, जल्द ही इस तकनीक से देश भर में कोल्ड स्टोरेज बनाए जाएंगे। उनके मुताबिक, देश में पैदा हो रहे प्याज का 45 से 50 प्रतिशत हिस्सा संरक्षण के अभाव में बर्बाद हो जाता है। हर वर्ष 10 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हो रहा है। इसे रोकने के लिए खास कोल्ड स्टोरेज तैयार किया है। इसमें सेब, केला, बैंगन और टमाटर आदि फसलें भी संरक्षित की जा सकती हैं। उनकी टीम अब गांवों के लिए छोटे कोल्ड स्टोरेज बना रही है।

राष्ट्रीय सहारा

कानपुर • सोमवार • 30 मई • 2022

जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम करने में

जैविक खेती हो सकती है सहायक

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि व प्रौद्योगिकी विवि में उद्यानिकी फसलों एवं जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन भी संबद्ध विषयों पर वैज्ञानिकों का संवाद जारी रहा। संगोष्ठी में जलवायु परिवर्तन के असर को कम करने के लिए जैविक खेती विधि को बढ़ावा देने की जरूरत को इंगित किया गया। संगोष्ठी आयोजन में सहयोगी पूर्व महानिदेशक उद्यान आईसीएआर डॉ.एचपी सिंह व सीएसए कुलपति डॉ.डीआर सिंह ने संगोष्ठी में आने वाले शोधपत्रों को महत्वपूर्ण बताया।

केन्द्रीय उपोष्ण संस्थान, रहमानखेड़ा लखनऊ प्रधान वैज्ञानिक डॉ.आरए राम ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को जैविक खेती विधि अपनाकर कम किया जा सकता है। जलवायु सामंजस्य बनाये रखने के लिए उन्होंने खेतों की मेड़ों पर नीम एवं फलदार पौधों को रोपण करने की सलाह भी दी। अपने शोध के हवाले उन्होंने कहा कि यदि मृदा उपजाऊ होती है तो वर्षा जल संचयन अधिक होता है और इस विधि द्वारा

सीएसए में संगोष्ठी

रासायनिक उर्वरकों के पोषकतत्वों का 25 प्रतिशत हिस्सा ही ले पाते हैं पौधे

एक ही खेत में तीन से चार फसलें एक वर्ष में ले सकते हैं। उन्होंने बताया कि रासायनिक उर्वरकों के पोषकतत्वों का 25 प्रतिशत हिस्सा ही पौधे ले पाते हैं बाकी की हानि होती है। जलवायु परिवर्तन के लिए कार्बन डायऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड एवं मिथेन गैस जिम्मेदार है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में केवल 5 से 6 प्रतिशत ही जंगल हैं, यदि 25 प्रतिशत जंगल कुल भाग में हो तो पर्यावरण संतुलित रहेगा। इसके लिए उन्होंने खेतों की मेड़ों पर नीम एवं फलदार पौधों का रोपण किये जाने की सलाह दी। इससे ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में कमी आयेगी और जैव विविधता बढ़ेगी। साथ ही गुणवत्तायुक्त उत्पाद भी प्राप्त होगा।

प्याज एवं लहसुन अनुसंधान

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में भाग लेते लोग। फोटो : एसएनबी

निदेशालय पुणे के निदेशक डॉ.मेजर सिंह ने बताया कि देश में 260 मिलियन टन प्याज का उत्पादन होता है। यदि इसकी हानियों को रोक लिया जाय तो ₹ 10 हजार करोड़ की बचत होगी। उनके मुताबिक 40 प्रतिशत प्याज खरीफ में व 60 प्रतिशत रबी में उत्पादन होता है। प्याज भंडारण के लिए 27 डिग्री सेल्सियस तापमान के साथ ही भंडार गृह का हवादार होना आवश्यक है। उन्होंने प्याज भंडारण स्थिति को सुधारने पर जोर दिया।

संगोष्ठी में वैज्ञानिकों द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। विवि कुलपति डॉ.डीआर सिंह एवं पूर्व महानिदेशक उद्यान आईसीएआर डॉ.एचपी सिंह ने प्रस्तुत शोधपत्रों का अवलोकन किया। संगोष्ठी सचिव डॉ.करम हुसैन ने बताया कि चार दिवसीय इस संगोष्ठी के दूसरे दिन रविवार को संबद्ध विषयों पर वैज्ञानिकों ने 60 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किये।

अमर उजाला 30/05/2022

प्याज सड़ेगा नहीं, तो भाव बढ़ेगा नहीं

कोल्ड स्टोर के अभाव में हर साल 40 से 45 प्रतिशत प्याज हो जाता है बर्बाद

सीएसए स्थित कैलाश भवन में क्लाईमेट चेंज एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट ऑफ हार्टिकल्चर विषय पर हुई संगोष्ठी में मौजूद (बाएं से) डॉ. कृष्ण प्रसाद, डॉ. महक सिंह, डॉ. गोपाल लाल, डॉ. एके सिंह, डॉ. सलिल तिवारी। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

आम कोल्ड स्टोर में नहीं रखा जा सकता, प्याज एवं लहसुन शोध निदेशालय पुणे ने तैयार किया खास कोल्ड स्टोर

तकनीक जल्द ही निजी कंपनी को दी जाएगी, इससे बाजार में आएंगे ये खास कोल्ड स्टोर तो प्याज का हो सकेगा संरक्षण

कानपुर। प्याज को आम कोल्ड स्टोर में रखकर संरक्षित नहीं किया जा सकता। इस वजह से हर साल 40 से 45 प्रतिशत प्याज सड़ जाता है। मतलब करीब 10 हजार करोड़ का प्याज बर्बाद हो जाता है। यही वजह है कि प्याज की कमी होती है और भाव बढ़ जाते हैं। इसे देखते हुए प्याज एवं लहसुन शोध निदेशालय पुणे ने खास किस्म का कोल्ड स्टोर तैयार किया है। इस कोल्ड स्टोर के भीतर तापमान 27 डिग्री सेल्सियस, आर्द्रता 60 से कम और हवा के संचार की व्यवस्था की गई है। इससे प्याज खराब नहीं होगा।

डॉ. मेजर सिंह सीएसए।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में क्लाईमेट चेंज एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट ऑफ हार्टिकल्चर विषय पर शुरू हुई चार दिवसीय संगोष्ठी के दूसरे दिन प्याज एवं लहसुन शोध निदेशालय पुणे के निदेशक डॉ. मेजर सिंह ने बताया कि कोल्ड स्टोर का प्रोटोटाइप तैयार कर तकनीक को विकसित किया है। जल्द ही तकनीक को किसी निजी कंपनी को ट्रांसफर किया जाएगा, ताकि कोल्ड स्टोर बाजार में आएं और प्याज का उचित संरक्षण हो सके। उन्होंने बताया कि प्याज की कटाई मई, जून और नवंबर में की जाती है। प्याज का बड़ा हिस्सा महाराष्ट्र में पैदा होता है।

जलवायु परिवर्तन से होने वाले फसलों के नुकसान को बचाएगी जैविक खेती

केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान (सीआईएसएच) रहमानखेड़ा लखनऊ के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आरए राम ने बताया कि जलवायु परिवर्तन से फसलों को होने वाले नुकसान से जैविक खेती के जरिये ही बचा जा सकता है। जैविक खेती में मिट्टी बारिश का पानी सोख लेती है, जबकि रासायनिक उर्वरकों के उपयोग वाली खेती में मिट्टी पानी नहीं सोख पाती है। इससे मिट्टी बंजर होने की ओर बढ़ती है। कहा कि प्रदेश में 25 फीसदी जंगल होना आवश्यक है, जो वर्तमान में पांच से छह प्रतिशत है। जंगल होने से पेड़ कार्बन डाई आक्साइड सोखते हैं, समय से बरसात होती, जल स्तर ऊपर होता है। साथ ही जैव विविधता में वृद्धि होती है।

डॉ. आरए राम सीएसए।

मलिहाबाद में कम होगी आम की पैदावार, लग रहे नए रोग : डॉ. राम ने बताया कि जलवायु परिवर्तन की वजह से इस बार मलिहाबाद में आम की पैदावार 25 प्रतिशत तक कम होगी। रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग से आम में नए-नए रोग आ रहे हैं, जिनके उपचार पर शोध किया जा रहा है। मलिहाबाद में रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग से आम का स्वाद और रस दोनों कम हो रहे हैं। साथ ही पोषण तत्वों की मात्रा में भी कमी आ रही है। फसल के मित्र कीट भी नष्ट हो रहे हैं। बताया कि सीआईएसएच रहमानखेड़ा ने आम की 1100 प्रजातियां विकसित की हैं। अरुणिमा और अंबिका प्रजाति के आम बैगनी और लाल रंग के होते हैं। इन्हें विदेश में निर्यात किया जाता है। इसके अलावा अन्य कुलपतियों ने भी विचार रखे। इस मौके पर कुलपति डॉ. डीआर सिंह, डॉ. आशीष श्रीवास्तव, डॉ. एसएन सुनील पांडेय, डॉ. खलील खान आदि मौजूद रहे।